Contents

विषय - सूची

विषय - सूची

प्राक्कथन -------- पृ. ------ से ---------

प्रथम अध्याय पृ.

मिथिला, मैथिल और मैथिली ।

मिथिला जनपद: एक ऐतिहासिक विश्लेषण ------ विदेघ और शतपथ ब्राह्मण ------- उपनिषद् और विदेह ------- रामायणा और मिथिला -------- विभिन्न पुराण और मिथिला ------- ऐतिहासिक और मिथिला ------- तिरहुत ------- सीमा ------- प्रादेशिक विशेषाता ------- भूमि और नदी ------ ऊपज ------- सामान्य जन-जीवन का स्वरूप ------- पोशाक - व्यवहार ------- खान-पान ------ कुलीनता की प्रथा और उसका स्वरूप ----- हरिसिंह देव और कुलीनता ------ वैवाहिक संबंध और कुलीनता ------ सांस्कृतिक एवं धार्मिक स्थिति ------ जनक-याज्ञ वल्क्य और मिथिला ------ पुराण और मिथिला ------मिथिला का दार्शनिक चिन्तन ------ पंचदेवोपासना और मिथिला ----- तांत्रिक पद्धति ------ जन-जीवन और तंत्र शास्त्र ------ साहित्य और संगीत ------ संस्कृत साहित्य और मिथिला ------ नृत्य भारतीय भाषा और मिथिला ----- नान्य देव और संगीत ------ इसकी परम्परा और व्यापकता ----- मैथिली एवं हिन्दी के साथ उसका संबंध ------ क्या मैथिली स्वतंत्र भाषा है ? ----- भाषा-विकास की तीन अवस्थाएं ------ संस्कृत ------ प्राकृत ------ बौद्धकालीन प्रादेशिक बोलियां ----- अशोककालीन प्राकृत ----- पालि ----- अपभ्रंश ----- आधुनिक भाषाएं ----- भाषा-विकास का सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक आधार ------ सामंतवादी सत्ता तथा भाषा-प्रसार ------- बिहार प्रदेश का उक्त संबंध ------ पश्चिम से रहा है ------ भाषागत संबंध और बिहार प्रदेश ------ नेपाल के मैथिली नाटकों में व्रज और हिन्दी का व्यवहार ------- भाषा और बोली का संबंध ------

डा. राम विलास शर्मा और बोली ------- मेरिओपाई और बोली ------ ब्लूमफील्ड और बोली ------ प्रत्यय-विभक्तियां-क्रिया--सर्वनाम-- आदि तत्वों पर मैथिली का परीक्षण ----- कारक ----- मैथिली-अवधी और हिन्दी की तुलना ------ लिंग ----- सर्वनाम ------ शब्द भंडार ------ मैथिली लिपि और उसकी प्राचीनता ------ मैथिली का प्राचीनतम और समृद्ध साहित्य ------ चर्यापद-दोहाकोष तथा मैथिली ---- फ्रांस की भाषा प्रोवांसाल और मैथिली ------ रामायण और मैथिली तथा यहां के विद्वानों की भावुकता ------- निष्कर्ष ----- मैथिली हिन्दी की एक उपभाषा है ।

द्वितीय अध्याय । पृ.

भारतीय नाट्य परम्परा और मैथिली नाटक ।

काव्य के दो रूप ----- श्रव्य और दृश्य ------ दृश्य काव्य की विशेषता एवं महत्ता ------ रूपक तथा ड्रामा शब्द का तात्पर्य ----- भरत और धनंजय के मत में रूपक ------ अरस्तू और ड्रामा शब्द ------- सिसरो, ह्यूगो और कोलरिज की इस पर व्याख्या ------ निकर्ष ------ नाट्योत्पत्ति ----- भरतमुनि का विचार ------- मैकसमूलर ------- प्रो. लेवी और नाट्योत्पत्ति ------- प्रो. श्रोयेदर और डा. हर्तेल का मत ------- मैकडोनल और नाच से नाट्योत्पत्ति ----- इस मत का खंडन ----- प्रो. पिशेल और पुत्तलिका नृत्य से नाट्योत्पत्ति ------ इस मत का खंडन ----- सूत्रधार के संबंध में महाभारत, भरतमुनि और शारदातनय की व्याख्या ------- प्रो. जागिरदार और पौराणिक सूत से नाट्योत्पत्ति ------ प्रो. डी. आर. मांकड और नृत्य से नाट्योत्पत्ति ------- डा. चन्द्रप्रकाश सिंह और वैदिक कर्मकाण्ड से नाट्योत्पत्ति ------ निष्कर्ष ------- पाश्चात्य देशों में नाट्योत्पत्ति का सिद्धान्त ------- प्रो. निकोल का मत ------ निष्कर्ष ------- नाट्य विषयक भारतीय अवधारणा ------ परिभाषा की

आवश्यकता ------- भरतमुनि के मत में नाटक ------- धनंजय ----- रामचंद्र गुणचंद्र ------- निष्कर्ष ------ पाश्चात्य अवधारणा ------ अरस्तू और नाटक ------- हेनिस्लो का मत ------ मिन्टरनो के मत में त्रास दी तथा कामदी ------ अरस्तू के अनुसार त्रासदी के तत्व ------- इस मत पर प्रो. निकोल की व्याख्या ------- एक तुलनात्मक परीक्षण ------- लोक नाटक तथा मैथिली नाट्य परंपरा ------- लोकधर्मी नाटक का स्वरूप ------ भरतमुनि के अनुसार नाटक की सफलता के लिये तीन प्रमाण ------- वैदिक काल से ही लोक-नाटक की धारा ------ शास्त्रीय और लौकिक नाटकों का तात्विक मिश्रण ------ पाश्चात्य देशों में भी इन दोनों रूपों का तात्विक मिश्रण ------ लोकधर्मी नाटकों के सामाजिक तत्व ------- स्वरूप ------- मैथिली नाटकों की तीन धारा ------ विभिन्न शैलियों का प्रभाव ------ यात्रा ------ उत्पत्ति ------ स्वरूप -------- प्रकार ------- कीर्तनियां शैली ------ विशेषता ------ स्वरूप -------- ओजापाली --------- परिचय ------- स्वरूप ------- मैथिली नाटक का उद्भव ------- तीन विभिन्न शैलियों की एकरूपता की खोज ------- संस्कृत नाट्य साहित्य से प्रत्यक्ष संबंधित ------ अतएव मूल प्रेरणा-स्त्रोत ------ मैथिली नाटक का रूपात्मक वर्गीकरण और काल-विभाजन -------- ।

तृतीय अध्याय । पृ.

आदिकालीन मैथिली नाटक ।

साहित्य जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है ------ अतएव विभिन्न परिस्थितियों का अंकन ------- ऐतिहासिक स्थिति ------- सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति -------- सिद्ध और नाथ सम्प्रदायों का

प्रभाव -------- उपर्युक्त स्थिति के कारण इस काल में नाटकों की तीन धारा ------- प्रहसन ------- इस रूप को अपनाये के कारण ------- मैथिली धूर्त समागम की नाटकीय समीक्षा ------ इसके विवेचन से लक्षण ग्रंथ से पहले लक्ष्य ग्रंथों की रचना ------- कथावस्तु -------- धूर्तसमागम और हास्यार्णव प्रहसन की तुलना ------- पारिजात हरण ------ सम्पादित प्रतियां ------- इस नाटक के नाम पर विचार ------ कथा-सार ------- हरिवंश की कथा से साम्य और अंतर ------- समीक्षा ------ गोरक्षा विजय ------- तालपत्र पर लिखित हस्तलिखित रूप का परिचय और प्रकाशित प्रति से भिन्नता ------ कथावस्तु ------- गोरखनाथ से संबंधित कथाएं ------- योगि -------- सम्प्रदायाविष्कृति में इनकी कथा ------- फयजुल्ला कृत गोरक्षा विजय से तुलना -------- विद्यापति की विशेषता ------- उक्त नाटक की समीक्षा ------- जन नाटक और शास्त्रीय शैली का संमिश्रण -------- निष्कर्ष -------- ।

चतुर्थ अध्याय । पृ.

आसाम का अंकिया नाट ।

पूर्व पीठिका -------- पूर्ववर्ती और समसामयिक स्थिति ------- भक्ति आन्दोलन का आसामी साहित्य पर प्रभाव और नव जागरण ------- आसाम में पूर्व काल से प्रचलित वैष्णव धर्म और उसका संस्थान ------- सत्र ---------- स्वरूप और विशेषता ------- नामघर ------- महत्व ----- इस धर्म में शंकरदेव का आगमन और नाट्यरूपों का प्रचलन ------- इसके अपनाये जाने के कारण ------- भक्ति सिद्धान्त के प्रचार के लिये नाट्यरूप उपयुक्त ------- आसाम के जन-नाट्य रूप और अंकिया नाटक -------- ढुलिया का प्रदर्शन ------- इसके भेद ------- उक्त प्रदर्शन से ओजापाली का विकास ------- स्वरूप ------- इसने अंकिया नाट के विकास में योगदान किया ------- अंकिया नाट ------- संस्कृत नाट्य शैली से समता और

अन्तर ------- नाटकों के भेद ----- नाट ----- यात्रा ----- झूमरा
-------- आसामी नाटकों की रंगमंचीय रचना ------- प्रसाधन -------
अभिनय ------- पूर्वरंग की प्रक्रिया -------- अंकिया नाट की भाषा
-------- निष्कर्ष ------- अंकिया नाट पर अन्य जन-नाट्य का प्रभाव
-------- प्रमुख नाटककार और उनका परिचय ------- शंकरदेव और
उनकी कृतियां ------- माधवदेव ------ परिचय - रचनाएं --------
गोपाल आटा ------- रचनाएं ------- रामचंद्र ठाकुर ------- नाटक
------- अंकिया नाट का सम्पूर्णत: परीक्षण ------- विशेषताएं
-------- सफलता ------- निष्कर्ष -------- ।

पंचम अध्याय । पृ .

मध्यकालीन मैथिली नाटक : नेपाल के मैथिली नाटक ।

उपयुक्त आश्रय प्राप्त कर कीर्तनियां नाटक नेपाल में पल्लवित हुआ
------- अतएव राजनीतिक एवं धार्मिक परिस्थितियों का अंकन -------
ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि ------- जयप्रकाशमल्ल के समय से मल्ल वंश के हाथ में
शासन -------- विभिन्न धर्मों का प्रभाव ------- यक्षमल्लने राज्य को
तीन समान भागों में विभक्त किया ------- इसी विभाजन से साहित्यिक
एवं सांस्कृतिक चेतना का सूत्रपात ------- भातगांव के विभिन्न राजा और
राजनीतिक स्थिति ------- कान्तिपुर की राजनीतिक परिस्थिति -------
बनिकपुर के राजा -------- तीनों राज्यों के पारस्परिक संघर्ष से
पृ वीनारायण साह का आगमन और गोरखाली शासन की स्थापना -------
निष्कर्ष ------- यहां के नाट्य साहित्य पर विभिन्न प्रभाव -------
नाटकों का स्वरूप ------- कथावस्तु ------- पौराणिक आधार -------
नाटकों का प्रारंभ -------- पात्रों का प्रवेश और निर्गम का क्रम ---------
चरित्र चित्रण -------- कथोपकथन ------- भाषा ------ प्रसंगानुकूल
इसकी क्षमता -------- संस्कृत, प्राकृत, मैथिली, व्रज, हिन्दी, नेवारी का

मिश्रण ------- सभी रसों का समावेश ------- दरबारी वातावरण के कारण श्रृंगार की प्रधानता ------- अभिनय तथा अंक-दृश्य की योजना ------- अन्त: साक्ष्य के आधार पर परीक्षण ------- नाटकों का अंत -------- अन्य विशेषताएं ------- गीति-नाट्य और नाटक प्रयोग की रचना ------- निष्कर्ष ------- इन नाटकों की सफलता का परीक्षण -------- विभिन्न लेखकों के नाटक ------- विश्वमल्ल और उनके नाटक ------- जगज्योतिर्मल्ल और उनके नाटक ------- जगत् प्रकाश मल्ल, सुमतिजितामित्र मल्ल, भूपतीन्द्र मल्ल और रणजितामित्र मल्ल के नाटक ------- कांतिपुर तथा बनिकपुर में नाटकों की रचना -------- कुछ रचनाओं का संक्षिप्त परिचय -------- मुदितकुवलयाश्व -------- प्रारंभ और अंत ------- कथा-सार ------- विशेषता -------- कुंज विहारी नाटक ------- प्रारंभ और अंत ------- कथा-सार -------- विशेषता ------- उषाहरण ------- प्रारंभ ~~कक~~--- अंत -------- समीक्षा -------- कथा-सार -------- विष्णु पुराण से अन्तर ------- नलीय नाटक ------- प्रारंभ ------ अंत --------- कथा-सार -------- विशेषता -------- पारिजात हरण ------ प्रारंभ और अंत ------- कथा-सार ------- समीक्षा ------- प्रभावती हरण -------- प्रारंभ और अंत ------- कथा-सार ------- मलय गंधिनी -------- प्रारंभ ------- अंत ------- कथा-सार ------- समीक्षा -------- कालिय मथन ------- प्रारंभ ------ अंत ----- कथा-सार -------- विशेषता --------- मदालसा हरण ------- गीति नाट्य की शैली पर इसकी रचना ------- प्रारंभ ----- अंत ------- कथा-सार भाषा नाटक ------- विवेचना ------- प्रारंभ और अंत --------- कथा-सार ------- रामायण नाटक ------- प्रारंभ ----- अंत ------- माधवानल -------- प्रारंभ ------ अंत -------समीक्षा ----- कथा-सार आलम ----- कृत माधवानल कामकन्दला से तुलना ------- निष्कर्ष ----- ।

षष्ठ अध्याय । पृ.

मध्यकालीन मैथिली नाटक : मिथिला के कीर्तनियां नाटक ।

मिथिला में परिस्थितियों की अनुकूलता से नाट्यरूपों का प्रचलन ------- ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि ------- धार्मिक स्थिति --------- नाटकों का स्वरूप -------- पौराणिक आख्यान और उनके अपनाये जाने के कारण ------- कथा-वस्तु का स्वरूप ------- अभिनेता की कुशलता ------- संस्कृत, प्राकृत और मैथिली का मिश्रण आवश्यक ------- पात्रों का प्रवेशादिक्रम ------- अभिनय का समय ------- रंगमंचीय स्वरूप -------- नाटककार तथा उनकी कृतियां ------- आनन्द विजय नाटिका ------ कथा-सार ------- समीक्षा ------- रूक्मिणी परिणय ------- इसका स्थान ------- लोकप्रियता ------ कथा-सार ------- समीक्षा -------- गौरी स्वयंवर ------- इसके दो संस्करण ------- विशेषता ------- कृष्ण केलि माला ------- समीक्षा ------- गौरी परिणय ------- समीक्षा ------- श्री कृष्ण जन्म रहस्य ------- परिचय ------- गौरी स्वयंवर ------- नाम का परीक्षण ------- लेखक की मौलिकता -------- अन्य नाटकों से भिन्नता ------- राम चरित मानस के पार्वती विवाह प्रसंग से तुलना ------- प्रभावती हरण ------- समीक्षा ------- निष्कर्ष -------- ।

सप्तम अध्याय । पृ.

आधुनिक युग के मैथिली नाटक ।

सम सामयिक परिस्थितियों की रूपरेखा और विविधता ------- विषय वस्तु की विविधता की दृष्टि से नाटकों का वर्गीकरण -------- जीवनका से नवीन धारा का सूत्रपात ------- इनकी विशेषता ------- समन्वय वादी दृष्टिकोण ------- थियेट्रिकल कंपनी का प्रभाव --------

जीवन झा के नाटक ------- सुन्दर संयोग ------- विवेचन और विश्लेषण ------- नर्मदा सागर सत्तक और मैथिली सत्तक का परिचय ------- सामवती पुनर्जन्म ------- विशेषता ------- थियेट्रिकल कंपनी का प्रभाव -------- कीर्तनियां नाटक ------- उषाहरण ------- माधवानंद और उसकी विवेचना ------- अन्य कीर्तनियां नाटक -------- पौराणिक नाटक ------- नाट्यकार ------- सावित्री सत्यवान ------- दूतांगद व्यायोग ------- समीक्षा -------- गांधर्व विवाह ------- समालोचना ------- आचार्य द्रोण -------- ऐतिहासिक नाटक ------- उगना ------- समीक्षा ------- विशेषताएं ------- मैथिली नाट्य साहित्य की अमर कृति ------- विद्यापति ------- विशेषता ------- चल चित्र की शैली का नवीन अनुकरण ------- रूपकात्मक नाटक ------- कलिधर्म प्रकाशिका ------- परिचय -------- मिथिला नाटक ------- विशेषता ------- सामाजिक नाटक ------- चीनीक लड्डू ------- कथावस्तु ------- समीक्षा ------- प्राच्य और पाश्चात्य शैली का समन्वय ------- सर्वोच्च सामाजिक नाटक -------- बसात -------- कथावस्तु ------- विवेचन और विश्लेषण -------- एकांकी नाटक ------- इसका स्वरूप ------- विशेषताएं --------- मैथिली नाट्य ---- साहित्य में एकांकी ------- मुनिक मतिभ्रम -------- समालोचना --------- याज्ञवल्क्य विजय -------- छींक ---------- बाल्टीकलब ------- मुनरीक मोल ------- समीक्षा ------- कालिदास ------- निष्कर्ष ------- रेडियो नाटक ------- स्वरूप ---------- रंगमंचीय नाटक से अन्तर ------- मैथिली में रेडियो नाटक ।

उपसंहार -।   पृ.

मैथिली नाटक की धारा अविच्छिन्न ------- परिस्थितियों के कारण इसके विभिन्न रूप ------- इसके विकास के षष्ठ सोपान -------- मैथिली नाटक का भविष्य --------- ।

---000---